Matangi Tantra(Sumukhi Mantra Prayoga)

मातंगी-तंत्र (सुमुखी-मंत्र प्रयोग)

भगवती मातंगी प्रचलित दश महाविद्याओं में से एक हैं, जो वशीकरण, सम्मोहन, ज्ञान, सर्वाभिष्ट की सिद्धि हेतु सर्वोपरि मानी जाती हैं। वाम मार्ग से उपासना करने पर ये अतिशीघ्र प्रसन्न होती हैं। इन्हें उच्छिष्ट चाण्डालिनी एवं सुमुखी के नाम से भी जाना जाता है। इनके मंत्रों का जप भोजन करने के उपरांत जूठे मुख से करने का विधान है। जप करने के बाद जो भोजन आपने किया है, उसी भात से इनके मंत्र से होम करना चाहिए। मुख्य रूप से इनके मंत्र के प्रयोग निम्नवत् हैं:-

१. भात में दही मिलाकर एक लाख मंत्रों से आहुति देने से अधिकारी, राजा, मंत्री आदि साधक के वशीभूत हो जाते हैं।
२. समस्त विद्याओं में पारंगत होने के लिए साधक को मार्जार (बिलाव) के मांस से होम करना चाहिए।
३. खीर से होम करने से भी विद्या की प्राप्ति होती है।
४. धन-प्राप्ति के लिए साधक को बकरे के मांस से होम करना चाहिए।
५. जन-समूह को वशीभूत करने के लिए साधक को रजस्वला स्त्री का अन्दर का वस्त्र लेकर, उसके छोटे-छोटे भाग करके, उन्हें शहद और खीर में मिलाकर होम करना चाहिए।
६. लक्ष्मी प्राप्ति हेतु साधक को पान, घी व शहद से होम करना चाहिए।
७. स्त्री-आकर्षण के लिए साधक को तत्काल मारे गये बिलाव के मांस एवं उसके बाल घी, एवं शहद के साथ मिलाकर होम करना चाहिए।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

८. स्त्री-आकर्षण एवं विद्या-प्राप्ति हेतु साधक को खरगोश के मांस से हवन करना चाहिए।

९. शत्रु को वशीभूत करने के लिए साधक को धतूरे की लकड़ी से जलाई गयी चिता की अग्नि में कोयल एवं कौए के पंखों से होम करना चाहिए।

१०. अपने शत्रुओं के मध्य कलह उत्पन्न करने के लिए साधक को कौवे और उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।

११. किसी भी स्त्री का गर्भ गिराने के लिए साधक को उल्लू के पंखों से होम करना चाहिए।

१२. किसी बंध्या स्त्री को पुत्र-प्राप्ति के लिए बेल वृक्ष के पत्तों को घी में मिलाकर एक हजार की संख्या में प्रतिदिन आहुति देते हुए एक माह तक प्रयोग करना चाहिए।

१३. किसी भी भाग्यहीन स्त्री को सौभाग्यवती बनाने के लिए बंधूक पुष्पों को शहद में मिलाकर होम करना चाहिये।

१४. अपनी अभिष्ट-सिद्धि के लिए साधक को किसी वन, एकांत स्थान, चौराहा, उजड़े हुए गांव, या फिर निर्जन स्थान पर भगवती मातंगी को बलि समर्पित करके जूठे मुंह से १,००० मंत्रों का जप करना चाहिए।

इसके उपरांत मैं यहां मां मातंगी के मंत्र एवं उसके विधान का उल्लेख कर रहा हूँ। सर्वप्रथम साधक को किसी भी मंत्र का जप करने से पूर्व उसका उत्कीलन करना चाहिए ।भगवती मातंगी का जो मंत्र मैं यंहा लिख रहा हूँ, उसके उत्कीलन के लिए साधक को १० माला अग्रलिखित मंत्र का जप करना चाहिए-

उत्कीलन मंत्रः- ऐं ह्रीं सुमुख्यै नमः ।

इसके बाद मंत्र का विनियोग करें, यथा--

विनियोगः- अस्य श्री सुमुखी मंत्रस्य, भैरव ऋषिः, गायत्री छंदः, श्री सुमुखी देवता, आत्मनो-अभिष्ट सिद्धये, सुमुखी मंत्र जपे विनियोगः।

तदोपरांत षडंग-न्यास करें, यथा....

षडंग-न्यासः-

ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि हृदयाय नमः।

ॐ सुमुखि शिरसे स्वाहा।

DR.PURNATHJI(DR.RUPAKNATH)

ॐ देवि शिखायै वषट्।
ॐ महापिशाचिनि कवचाय हुम्।
ॐ ह्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ ठः ठः ठः अस्त्राय फट्।

इसके बाद माता मातंगी का ध्यान करें, यथा---

ध्यान

गुंजा-निर्मित-हार भूषित-कुचां सद्यौवनोल्लासिनीं ,
हस्ताभ्यां नृकपाल-खड्ग-लतिके रम्ये मुदा बिभ्रतीम् ।
रक्तालंकृति वस्त्रलेपन लसद्-देह-प्रभां ध्यायतां,
नृणां श्री सुमुखीं शवासनगतां स्यु: सर्वदा सम्पदः ।।

मंत्रः- ऐं क्लीं उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखी देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

सर्वजन-वशीकरण हेतु श्यामा मातंगी मंत्र(Shyama Matangi Mantra)

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ॐ नमो भगवति श्री मातंगीश्वरिं सर्वजन-मनोहारि सर्वमुख-रंजिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज-वशंकरि सर्व-स्त्री-पुरूष-वशंकरि सर्वदुष्ट-मृग-वशंकरि सर्व-सत्व-वशंकरि सर्वलोक-वशंकरि अमुकं (यंहा वांछित व्यक्ति का नाम लें ।) मे वशमानय स्वाहा।

इस मंत्र के ऋषि दक्षिणामूर्ति, छंद-गायत्री, देवता- मातंगीश्वरी, बीज- ऐं, शक्ति-सौः, कीलक-क्लीं एवं विनियोग - सर्वजन-वशीकरण हैं ।

DR.RUPNATH JI(DR.RUPAK NATH)

सर्वार्थ सिद्धि हेतु राजमातंगी मंत्र (Rajmatangi Mantra)

ॐ ह्रीं राजमातंगिनि मम सर्वार्थ-सिद्धिं देहि-देहि फट् स्वाहा ।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)